ISSN 0970-9312

प्राथमिक शिक्षक

शैक्षिक संवाद की पत्रिका

वर्ष 46 अंक 4 अक्तूबर 2022

11

बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों के इंटर्नशिप के दौरान उत्पन्न समस्याओं का अध्ययन

डिगर सिंह फर्स्वाण*

किरन सती**

अध्यापक का स्थान शिक्षा प्रक्रिया के तीन प्रमुख अंगों— अध्यापक, विद्यार्थी व पाठ्यवस्तु में सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। एक अच्छा अभ्यास-शिक्षण (इंटर्नशिप) सदैव अपने प्रशिक्षणार्थियों में विशेष प्रशिक्षण कौशलों में निपुणता प्रदान करता है। शिक्षण कौशल शिक्षक के हाथ में वह शस्त्र है जिसका प्रयोग करके शिक्षक अपने कक्षा शिक्षण को प्रभावशाली तथा सक्रिय बनाने का प्रयास करता है तथा कक्षा की अंत:क्रिया में सुधार लाने का प्रयास करता है। इस शोधपत्र में विद्यार्थी-शिक्षकों में कौशलयुक्त शिक्षा प्राप्त करने एवं शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में प्रवीणता लाने में आने वाली विभिन्न समस्याओं एवं तत्संबंधी तथ्यों पर प्रकाश डालने का प्रयास किया गया है। इस शोध अध्ययन की विधि सर्वेक्षण विधि है। इसमें उद्देश्यपूर्ण प्रतिदर्शन विधि का प्रयोग किया गया है। प्रतिदर्श के रूप में आम्रपाली इंस्टिट्यूट, हल्द्वानी, नैनीताल, उत्तराखंड में सत्र 2021–2022 में अध्ययनरत बी.एड. के 73 विद्यार्थी-शिक्षकों का चयन किया गया। शोध उपकरण के रूप में शोधार्थी द्वारा स्वनिर्मित अभ्यास शिक्षण सूचना-पत्र का प्रयोग किया गया, जिसमें शिक्षण कौशलों के प्रयोग तथा उनके प्रयोग के समय उत्पन्न होने वाली समस्याओं से संबंधित प्रश्न थे। इस शोध अध्ययन में निष्कर्षतः पाया गया कि विद्यार्थी-शिक्षकों को अभ्यास-शिक्षण के दौरान शिक्षण कौशलों का प्रयोग करने में सर्वाधिक समस्या प्रस्तावना प्रश्न निर्माण से आती है। इसके अतिरिक्त प्रस्तावना प्रस्तुतीकरण में, कक्षा-कक्ष में बच्चों से, पाठ योजना प्रारूप का पालन करने में तथा आधुनिक तकनीकी की सुविधा से भी विद्यार्थी-शिक्षकों को समस्या का सामना करना पड़ता है। शिक्षण कौशलों के ज्ञान का अभाव व उनकी सभी जगह पर प्रस्तुतीकरण का पर्याप्त अभ्यास न होना भी समस्या उत्पन्न करता है। इन समस्याओं का मुख्य कारण पर्याप्त विषय ज्ञान का अभाव, आत्मविश्वास की कमी, प्रशिक्षण संस्थानों में योग्य एवं प्रशिक्षित शिक्षकों की कमी, अभ्यास शिक्षण हेतु पर्याप्त समय न मिल पाना, क्योंकि संस्थान के पास प्रशिक्षण हेतु स्वयं के विद्यालय नहीं होते हैं, उन्हें इंटर्नशिप हेतु बाहर के विद्यालयों में जाना पड़ता है जहाँ पर पर्याप्त व व्यवस्थित प्रशिक्षण संपन्न कराना संभव नहीं हो पाता है।

*एसोसिएट प्रोफेसर, शिक्षाशास्त्र विद्याशाखा, उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्द्वानी, नैनीताल, उत्तराखंड 263 139

** सहायक प्राध्यापक, बी.एड. विभाग, आम्रपाली इंस्टिट्यूट, हल्द्वानी, नैनीताल, उत्तराखंड

शिक्षक प्रशिक्षण शिक्षा प्रक्रिया का महत्वपूर्ण भाग होता है। एक गुणवत्तापूर्ण शिक्षक प्रशिक्षण के द्वारा प्रशिक्षित शिक्षक एक व्यक्ति को कुशल नागरिक बनाने में सक्षम होता है। शिक्षक वह प्रकाश है जो सभी की जिंदगी में रोशनी भर देता है। शिक्षक एक मोमबत्ती रूपी ज्ञान का उजाला है जो विद्यार्थी को अँधेरे से निकालकर प्रकाश की ओर ले जाता है। शिक्षक की भूमिका किसी से छिपी नहीं है। शिक्षक अपनी शिक्षा के जरिये व्यक्ति, समाज और राष्ट्र का निर्माण करता है। उसकी शिक्षा की वजह से व्यक्ति में आत्मविश्वास का संचार होता है जिसकी वजह से वह अपनी जिंदगी में कुछ कर गुजरने की चाहत रखता है। शिक्षक एक खूबसूरत आईने की तरह है जिससे व्यक्ति अपने वजूद की पहचान कर पाता है। शिक्षा वह मजबूत ताकत है जिससे हम समाज को सकारात्मक बदलाव की ओर ले जा सकते हैं। भारत में शिक्षक-शिक्षा नीति को समय के हिसाब से निरूपित किया गया है और यह शिक्षा समितियों तथा आयोगों की विभिन्न रिपोर्टों में निहित सिफारिशों पर आधारित है, जिनमें से महत्वपूर्ण हैं— कोठारी आयोग (1966), चट्टोपाध्याय समिति (1985), राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एन.पी.ई. 1986 तथा पी.ओ.ए. 1992), आचार्य राममूर्ति समिति (1990), यशपाल समिति (1993) एवं राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (एन.सी.एफ. 2005)। नि:शुल्क और अनिवार्य बाल शिक्षा अधिकार (आर.टी.ई.) अधिनियम, 2009 जो 1 अप्रैल, 2010 से लागू हुआ, का देश में शिक्षक शिक्षा के लिए महत्वपूर्ण निहितार्थ है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020) में अध्यापक शिक्षा की गुणवत्ता पर जोर देते हुए स्पष्ट किया गया है कि अगली पीढ़ी को आकार देने वाले शिक्षकों के निर्माण में अध्यापक शिक्षा की भूमिका महत्वपूर्ण है। शिक्षकों को तैयार करना एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके लिए बहु-विषयक दृष्टिकोण और ज्ञान की आवश्यकता के साथ-साथ बेहतरीन प्रशिक्षकों के निर्देशन में मान्यताओं और मूल्यों के निर्माण के साथ ही साथ उनके उचित अभ्यास की भी आवश्यकता होती है।

उच्चतम न्यायालय द्वारा गठित न्यायमूर्ति जे.एस.वर्मा आयोग (2012) के अनुसार स्टैंड-अलोन टी.ई.आई., जिनकी संख्या 10,000 से अधिक है, अध्यापक शिक्षा के प्रति लेशमात्र गंभीरता से प्रयास नहीं कर रहे हैं। अतः इस सेक्टर और इसकी नियामक प्रणालियों में महत्वपूर्ण कार्यवाहियों के द्वारा पुनरुद्धार की तात्कालिक आवश्यकता है जिससे कि गुणवत्ता के उच्चतर मानकों को निर्धारित किया जा सके और शिक्षक शिक्षा प्रणाली में अखंडता, विश्वसनीयता, प्रभाविता और उच्चतर गुणवत्ता को बहाल किया जा सके। कोठारी आयोग (1964–1966) ने अपने प्रतिवेदन "शिक्षा तथा राष्ट्रीय विकास" में स्पष्ट किया है कि शिक्षा के स्तर तथा राष्ट्रीय विकास में शिक्षा के योगदान की जितनी भी बातें प्रभावित करती हैं, उनमें अध्यापक के गुण, क्षमता व चरित्र सर्वाधिक महत्वपूर्ण हैं। एक शिक्षक हमेशा शिक्षा प्रक्रिया को उचित दिशा प्रदान करने तथा अपने कार्य की उत्कृष्टता के लिए प्रतिबद्ध रहता है। हमारा वर्तमान समाज परिवर्तन व विकास के एक महत्वपूर्ण दौर से गुजर रहा है, ऐसी परिस्थिति में शिक्षक का

उत्तरदायित्व और भी अधिक बढ़ जाता है, क्योंकि शिक्षकों के ऊपर ही समाज तथा राष्ट्र के भावी निर्माताओं को तैयार करने का दायित्व होता है। एक अच्छा शिक्षक प्रशिक्षण सदैव अपनी प्रशिक्षण स्थिति में विशिष्ट शिक्षण कौशल में निपुणता प्रदान करता है। एक छात्राध्यापक के लिए आवश्यक हो जाता है कि वह शिक्षण कौशलों का अर्थ समझे, उनकी धारणाओं से परिचित हो और उन पर पूर्ण अधिकार प्राप्त करने में समर्थ हो, तभी वह एक अच्छा व निपुण शिक्षक बन सकता है। कोठारी आयोग (1964–1966) में शिक्षा में गुणात्मक सुधार लाने के लिए शिक्षकों को बतौर पेशेवर तैयार करने पर बल दिया गया था। आयोग का मत था कि शिक्षक-शिक्षा को एक तरफ विश्वविद्यालयों की अकादमिक मुख्यधारा में और दूसरी ओर स्कूली जीवन तथा शैक्षिक विकास में लाने की बात पर जोर दिया जाए। शिक्षण-कौशल शिक्षण व्यवहारों से संबंधित वह स्वरूप है जो कक्षा की अंतःक्रिया द्वारा उन विशिष्ट परिस्थितियों को जन्म देता है जो शैक्षिक उद्देश्यों की प्राप्ति में सहायक होती हैं और विद्यार्थियों को सीखने में सुगमता प्रदान करती हैं। एक शिक्षक केवल ऐसा व्यक्ति नहीं होता है कि वह दूसरों की शिक्षा हेतु परिस्थिति उत्पन्न कर सके, अपितु अपने शिक्षण कार्य में कुशलता एवं दक्षता भी विकसित करता है। वह सीखता ही नहीं है, अपितु स्वयं भी अभ्यास से व्यवसाय कौशल को विकसित कर लेता है। एक शिक्षक को प्रभावी शिक्षण के लिए अनेक कौशलों को सीखने तथा उनका समुचित प्रयोग करने की दक्षता हासिल करने की योग्यता विकसित करने की आवश्यकता होती है। दक्षता या क्षमता आवश्यक कौशल ज्ञान के वर्णन से मिलकर निर्मित होते हैं। वास्तविक संसार में दृष्टिकोण और व्यवहार में प्रभाव प्रदर्शन अति आवश्यक है। क्षमता-आधारित शिक्षा परिवार, समुदाय, वयस्कों व कार्यस्थल के लिए आवश्यक है।

शिक्षक-प्रशिक्षण पाठ्यक्रम में अध्ययनरत विद्यार्थी शिक्षक जो विभिन्न विषयों, जैसे— विज्ञान, मानविकी, वाणिज्य व अन्य विषयों की पृष्ठभूमि से जुड़े होते हैं। इन्हें शिक्षा पाठ्यक्रम के अंतर्गत नवीन विषय, जैसे— शिक्षा दर्शन, शिक्षा मनोविज्ञान, शिक्षा तकनीकी, शिक्षा प्रबंधन, शिक्षा का इतिहास, लैंगिक असमानता आदि विषयों का अध्ययन करना पड़ता है, यह सभी विषय शिक्षक प्रशिक्षण के अभिन्न अंग हैं, जिनका ज्ञान एक शिक्षक को होना आवश्यक है। इन विषयों के ज्ञान के अभाव में शिक्षण अधिगम प्रक्रिया पूर्ण नहीं हो सकती है। इन विषयों के साथ-साथ शिक्षक प्रशिक्षण में अभ्यास शिक्षण का भी महत्वपूर्ण स्थान है, जिसके द्वारा वह विभिन्न शिक्षण कौशलों का ज्ञान प्राप्त करता है। इस क्षेत्र में विद्यार्थी-शिक्षकों को विभिन्न समस्याओं का सामना करना पड़ता है। अभ्यास शिक्षण के दौरान विद्यार्थी-शिक्षकों को अनेक शिक्षण कौशलों को सीखना होता है, तथा उनका प्रस्तुतीकरण करना पड़ता है। विभिन्न कौशलों के विकास हेतु पाठ योजना का निर्माण करना होता है, जिसे विभिन्न शिक्षण विधियों के सहयोग से विकसित किया जाता है। पाठ योजना में प्रस्तावना प्रश्नों का निर्माण, समस्यात्मक प्रश्न का निर्माण, संपूर्ण पाठ योजना में विभिन्न प्रकार के प्रश्नों का निर्माण, जैसे— विकासात्मक प्रश्न, बोध प्रश्न, पुनरावृत्ति प्रश्न

निर्माण विद्यार्थी-शिक्षकों के लिए एक चुनौतीपूर्ण कार्य रहता है। व्याख्या लिखना तथा उसको प्रस्तुत करने में भी विद्यार्थी-शिक्षकों को परेशानी का सामना करना पड़ता है। इसके अतिरिक्त उद्देश्यों का चयन, शिक्षण सहायक सामग्री निर्माण तथा प्रस्तुतीकरण कार्य भी कम चुनौतीपूर्ण नहीं रहता है। कक्षा-प्रबंधन तथा अनुशासन, बच्चों की सहायता से विषयवस्तु को विकसित करना, प्रकरण का चयन तथा बच्चों में विषयवस्तु के प्रति रोचकता जैसे कार्यों में विद्यार्थी-शिक्षकों को परेशानी का सामना करना पड़ता है।

वस्तुतः शिक्षक-प्रशिक्षण कार्यक्रम एक चुनौतीपूर्ण कार्य है। इसी प्रशिक्षण के द्वारा विद्यार्थी-शिक्षकों को शिक्षण की बारीकियाँ सीखने का अवसर प्राप्त होता है तथा वह शिक्षण में दक्षता हासिल करने में सफल होता है। जिसके द्वारा उसमें शैक्षिक-सामाजिक अनुशासन, लगनशीलता, कर्तव्यनिष्ठा, समय का सदुपयोग, व्यावहारिकता जैसे गुणों का विकास होता है। ज्ञान को रोचक एवं सुबोध बनाने के लिए यह आवश्यक है कि बच्चों की शिक्षा का संबंध उनकी अधिकाधिक ज्ञानेंद्रियों के साथ हो, क्योंकि ज्ञानेंद्रियाँ ज्ञान के द्वार होते हैं। इसी उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए वर्तमान शिक्षण में सहायक सामग्री का प्रयोग प्रचुर मात्रा में किया जा रहा है। इससे सैद्धांतिक, मौखिक एवं नीरस पाठ शिक्षण सहायक सामग्री के प्रयोग से अधिक स्वाभाविक, मनोरंजक, उपयोगी तथा रुचिकर बनाया जा सकता है। सहायक सामग्री का उद्देश्य श्रवण एवं दृष्टि की ज्ञानेंद्रियों को सक्रिय बनाकर ज्ञान ग्रहण करने के मार्ग खोल देता है।

शिक्षण सहायक सामग्री को विषयवस्तु से संबंधित करना, आकर्षक तथा रुचि पैदा करने वाला बनाना तथा उसे उपयुक्त समय पर प्रस्तुत करना, उसे प्रभावपूर्ण ढँग से प्रस्तुत करना भी विद्यार्थी-शिक्षकों के लिए चुनौतीपूर्ण कार्य है। जब तक शिक्षण-सहायक सामग्री को उपरोक्त बातों को ध्यान में रखकर प्रस्तुत नहीं किया जाएगा, तब तक शिक्षण के सकारात्मक परिणाम को प्राप्त किया जाना संभव नहीं होगा। विद्यार्थी-शिक्षकों को अभ्यास शिक्षण के दौरान विभिन्न कौशलों के विकास तथा उनके समुचित प्रयोग में कठिनाई का सामना करना पड़ता है। अतः यहाँ महत्वपूर्ण प्रश्न यह है कि शिक्षण को प्रभावी कैसे बनाया जाए? शिक्षण को प्रभावी बनाने के लिए विषय का ज्ञान, आत्मविश्वास का विकास तथा कौशलों का ज्ञान होना आवश्यक है। अभ्यास शिक्षण के दौरान विद्यार्थी-शिक्षकों को कई बिंदुओं के साथ सामंजस्य स्थापित करना होता है, जैसे— कक्षा प्रबंधन तथा अनुशासन, बच्चों की सहभागिता, शिक्षण-कौशलों का समुचित प्रयोग, शिक्षण-अधिगम सामग्री का यथासमय प्रयोग, विषयवस्तु में नियंत्रण, रोचकता, आत्मविश्वास आदि।

उद्देश्य

इस शोध अध्ययन के निम्नलिखित उद्देश्य थे—

1. बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों के इंटर्नशिप के दौरान पाठ योजना निर्माण में कौशलों के लेखन में समस्या का अध्ययन।
2. शिक्षण-कौशलों के प्रयोग के समय उत्पन्न समस्या का अध्ययन।
3. कक्षा-अनुशासन में उत्पन्न समस्या का अध्ययन।

4. संपूर्ण इंटर्नशिप के दौरान उत्पन्न समस्या का अध्ययन।
5. स्कूल इंटर्नशिप की अवधि में प्राप्त सुविधाओं से उत्पन्न सर्वाधिक समस्या का अध्ययन।

विधि

इस शोध अध्ययन की प्रकृति सर्वेक्षण विधि है।

प्रतिदर्श

प्रतिदर्श के रूप में आम्रपाली इंस्टिट्यूट, हल्द्वानी, नैनीताल, उत्तराखंड में सत्र 2021–2022 में अध्ययनरत बी.एड. विभाग के 73 प्रशिक्षणार्थियों को सम्मिलित किया गया था। इसका चयन उद्देश्यपूर्ण प्रतिदर्शन विधि से किया गया था।

उपकरण

इस शोध अध्ययन हेतु स्वनिर्मित इंटर्नशिप सूचना पत्र का प्रयोग किया गया। उपकरण में शिक्षण कौशल के प्रयोग तथा उनके प्रयोग के दौरान उत्पन्न होने वाली समस्याओं से संबंधित प्रश्न थे। साथ ही इंटर्नशिप के दौरान कौन-कौन सी समस्याएँ अधिक आईं और किसमें अधिक सहयोग प्राप्त हुआ जैसे बिंदुओं को सम्मिलित किया गया था। उपकरण में पाठ योजना निर्माण में कौशल की समस्या, शिक्षण के दौरान कौशलों का प्रयोग, कक्षा अनुशासन में समस्या, संपूर्ण इंटर्नशिप में उत्पन्न समस्या एवं इंटर्नशिप अवधि में प्राप्त अन्य सुविधाओं को सम्मिलित किया गया।

आँकड़ों का संकलन

आँकड़ों का संकलन सत्र 2021–2022 में आम्रपाली इंस्टिट्यूट, हल्द्वानी, नैनीताल, उत्तराखंड के बी.एड. विभाग में अध्ययनरत 73 विद्यार्थी-शिक्षकों पर स्वनिर्मित अभ्यास शिक्षण सूचना पत्र प्रशासित कर किया गया।

विश्लेषण एवं व्याख्या

उद्देश्य 01— बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों की इंटर्नशिप के दौरान पाठ योजना निर्माण में कौशलों के प्रयोग की समस्या के अध्ययन से प्राप्त आँकड़ों के विश्लेषण को सारणी 1 में प्रस्तुत किया गया है। सारणी 1 में प्रदत्त आँकड़ों के आधार पर स्पष्ट है कि अभ्यास शिक्षण के दौरान प्रस्तावना प्रश्न निर्माण में 52.05 प्रतिशत प्रशिक्षणार्थियों को सर्वाधिक समस्या आई, जबकि सबसे कम 6.85 प्रतिशत समस्या व्याख्या लिखने में आई। इसी प्रकार प्रकरण का चयन करने में 23.29 प्रतिशत प्रशिक्षणार्थियों को, विभिन्न प्रकार के प्रश्न निर्माण में 9.59 प्रतिशत प्रशिक्षणार्थियों को तथा 8.22 प्रतिशत प्रशिक्षणार्थियों को श्यामपट्ट सारांश लिखने में समस्या उत्पन्न हुई। प्रस्तावना प्रश्न निर्माण पाठ योजना का महत्वपूर्ण कौशल होता है। इसके लिए समुचित अभ्यास व विषय का पर्याप्त ज्ञान होना आवश्यक होता है। प्रस्तावना प्रश्न निर्माण एक शिक्षण कला है जो बच्चों के स्तर के अनुसार निर्मित करना होता है।

सारणी 1— पाठ योजना निर्माण में कौशलों के लेखन में सर्वाधिक समस्या

क्रम सं.	पाठ योजना निर्माण में कौशलों के लेखन में सर्वाधिक समस्या	प्रतिशत (%)
1.	प्रकरण का चयन करने में	23.29
2.	प्रस्तावना प्रश्न निर्माण में	52.05
3.	व्याख्या लिखने में	6.85
4.	श्यामपट्ट सारांश लिखने में	8.22
5.	प्रश्न निर्माण करने में	9.59
	योग	100.0

उद्देश्य 02— प्रशिक्षणार्थियों को इंटर्नशिप के दौरान शिक्षण कौशलों के प्रयोग के समय उत्पन्न समस्या के अध्ययन से प्राप्त आँकड़ों का विश्लेषण सारणी 2 में दिया गया है। सारणी में प्रस्तुत प्रदत्तों का अवलोकन करने पर स्पष्ट होता है कि शिक्षण कौशलों के प्रयोग में सर्वाधिक समस्या 46.57 प्रतिशत प्रशिक्षणार्थियों को प्रस्तावना प्रस्तुतीकरण में आई तथा सबसे कम 8.22 प्रतिशत प्रश्नों को पूछने में सर्वाधिक समस्या आई। इसी प्रकार प्रकरण निकालने में 20.55 प्रतिशत विद्यार्थी-शिक्षकों को सर्वाधिक समस्या का सामना करना पड़ा। व्याख्या करने में 13.70 प्रतिशत तथा श्यामपट्ट कार्य में 10.96 प्रतिशत विद्यार्थी-शिक्षकों को सर्वाधिक समस्या का सामना करना पड़ा। प्रस्तावना प्रस्तुतीकरण करना निश्चित रूप से विद्यार्थी शिक्षकों के लिए एक चुनौतीपूर्ण कार्य है, क्योंकि प्रस्तावना अभ्यास शिक्षण का प्रथम सोपान होता है। प्रस्तावना कौशल प्रस्तुतीकरण में समस्या का मुख्य कारण विषय का पर्याप्त ज्ञान न होना, प्रश्नों का निर्माण उपयुक्त ढँग से न हो पाना, अभ्यास की कमी, आत्मविश्वास की कमी तथा प्रश्नों का तारतम्य सही ढँग से न हो पाना भी हो सकता है।

सारणी 2— अभ्यास शिक्षण के दौरान कौशलों के प्रयोग में सर्वाधिक समस्या

क्रम सं.	अभ्यास शिक्षण के दौरान कौशलों के प्रयोग में सर्वाधिक समस्या	प्रतिशत (%)
1.	प्रस्तावना प्रस्तुतीकरण में	46.57
2.	प्रकरण निकालने में	20.55
3.	व्याख्या करने में	13.70
4.	प्रश्नों को पूछने में	8.22
5.	श्यामपट्ट कार्य में	10.96
	योग	**100.0**

उद्देश्य 03— बी.एड. विद्यार्थी-शिक्षकों को इंटर्नशिप के दौरान कक्षा अनुशासन में उत्पन्न समस्याओं के अध्ययन से प्राप्त आँकड़ों का विश्लेषण सारणी 3 में दिया गया है। सारणी में प्रस्तुत प्रदत्तों का अवलोकन करने पर स्पष्ट होता है कि अभ्यास शिक्षण के दौरान सर्वाधिक 49.31 प्रतिशत विद्यार्थी-शिक्षकों को बच्चों से सर्वाधिक समस्या आई तथा सबसे कम 9.59 प्रतिशत विद्यार्थी-शिक्षकों को सर्वाधिक समस्या विषयवस्तु से आई। इसी प्रकार कक्षा-कक्ष की व्यवस्था से 16.44 प्रतिशत विद्यार्थी-शिक्षकों को सर्वाधिक समस्या का सामना करना पड़ा। शिक्षण शैली के विकास में 13.70 प्रतिशत तथा विद्यालय के वातावरण से 10.96 प्रतिशत विद्यार्थी-शिक्षकों को सर्वाधिक समस्या आई। कक्षा प्रबंधन एवं कक्षा अनुशासन एक महत्वपूर्ण कारक होता है। कक्षा अनुशासन के बिना प्रभावी शिक्षण की कल्पना नहीं की जा सकती है। कक्षा अनुशासन एक कला है। बच्चों की वैयक्तिक विभिन्नता को न समझ पाना, शिक्षण का पर्याप्त अभ्यास न होना, विषय का समुचित ज्ञान न होना, आत्मविश्वास की कमी तथा कक्षा-कक्ष में समुचित सुविधाओं का अभाव इसके प्रमुख कारण हो सकते हैं।

सारणी 3— कक्षा अनुशासन में उत्पन्न सर्वाधिक समस्या

क्रम सं.	कक्षा अनुशासन में उत्पन्न सर्वाधिक समस्या	प्रतिशत (%)
1.	बच्चों से	49.31
2.	कक्षा-कक्ष की व्यवस्था से	16.44
3.	विद्यालय के वातावरण से	10.96
4.	विषयवस्तु से	9.59
5.	शिक्षण शैली के विकास में	13.70
	योग	100.0

उद्देश्य 04— बी.एड. विद्यार्थी-शिक्षकों के संपूर्ण अभ्यास शिक्षण के दौरान उत्पन्न समस्या के अध्ययन से प्राप्त आँकड़ों के विश्लेषण को सारणी 4 में दिया गया है। सारणी 4 में संपूर्ण इंटर्नशिप की अवधि में उत्पन्न समस्या का वर्णन किया गया है, जिसमें सर्वाधिक 58.90 प्रतिशत विद्यार्थी-शिक्षकों को सर्वाधिक समस्या पाठ योजना प्रारूप का पालन करने में आई तथा सबसे कम समस्या 8.22 प्रतिशत विद्यार्थी शिक्षकों को सहायक सामग्री का प्रयोग करने में उत्पन्न हुई। इसी प्रकार शिक्षण प्रक्रिया में 9.59 प्रतिशत, बच्चों की सहभागिता में 10.96 प्रतिशत तथा कक्षा-प्रबंधन में 12.33 प्रतिशत विद्यार्थी शिक्षकों को सर्वाधिक समस्याओं का सामना करना पड़ा। अभ्यास शिक्षण में विद्यार्थी-शिक्षकों को एक निर्धारित पाठ योजना प्रारूप के आधार पर पाठ योजना तैयार कर शिक्षण कार्य करना होता है। पाठ योजना प्रारूप का पालन करते हुए शिक्षण कार्य करना विद्यार्थी शिक्षक के लिए एक चुनौतीपूर्ण कार्य होता है।

सारणी 4 — संपूर्ण अभ्यास शिक्षण अवधि में उत्पन्न सर्वाधिक समस्या

क्रम सं.	संपूर्ण अभ्यास शिक्षण अवधि में उत्पन्न सर्वाधिक समस्या	प्रतिशत (%)
1.	शिक्षण प्रक्रिया में	9.59
2.	सहायक सामग्री का प्रयोग करने में	8.22
3.	पाठ योजना प्रारूप का पालन करने में	58.90
4.	बच्चों की सहभागिता में	10.96
5.	कक्षा प्रबंधन में	12.33
	योग	100.0

उद्देश्य 05— बी.एड. विद्यार्थी-शिक्षकों के स्कूल इंटर्नशिप की अवधि में प्राप्त सुविधाओं से उत्पन्न समस्या के अध्ययन से प्राप्त आँकड़ों के विश्लेषण को सारणी 5 में दर्शाया गया है। सारणी 5 में प्रस्तुत आँकड़ों का अवलोकन करने पर स्पष्ट होता है कि 54.79 प्रतिशत विद्यार्थी-शिक्षकों को शिक्षण में आधुनिक तकनीकी की सुविधा से सर्वाधिक समस्याओं का सामना करना पड़ा तथा सबसे कम 6.85 प्रतिशत विद्यार्थी-शिक्षकों को सर्वाधिक समस्या विद्यार्थी-शिक्षकों को बैठने की उचित व्यवस्था से उत्पन्न हुई। इसी प्रकार अध्ययन से प्राप्त आँकड़ों के आधार पर पेयजल की सुविधा से 10.96 प्रतिशत विद्यार्थी शिक्षकों को, शौचालय की सुविधा से 9.59 प्रतिशत तथा पुस्तकालय की सुविधा से 17.81 प्रतिशत विद्यार्थी-शिक्षकों को सर्वाधिक समस्या का सामना करना पड़ा। वर्तमान समय में शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में आधुनिक तकनीकी का महत्वपूर्ण योगदान होता है, इसके लिए इससे

संबंधित संसाधनों की समुचित व्यवस्था का होना भी आवश्यक होता है।

सारणी 5— स्कूल इंटर्नशिप की अवधि में प्राप्त सुविधाओं से उत्पन्न सर्वाधिक समस्या

क्रम सं.	स्कूल इंटर्नशिप की अवधि में प्राप्त सुविधाओं से उत्पन्न सर्वाधिक समस्या	प्रतिशत (%)
1.	पेयजल की सुविधा से	10.96
2.	शौचालय की सुविधा से	9.59
3.	पुस्तकालय से	17.81
4.	प्रशिक्षिणार्थियों के बैठने के लिए उचित व्यवस्था से	6.85
5.	आधुनिक तकनीकी की सुविधा से	54.79
	योग	**100.0**

निष्कर्ष

शोध अध्ययन के परिणाम यह बताते हैं कि विद्यार्थी-शिक्षकों को अभ्यास शिक्षण के दौरान सर्वाधिक समस्या प्रस्तावना प्रश्न निर्माण में आती है। इसके साथ ही प्रस्तावना प्रस्तुतीकरण में, पाठ योजना प्रारूप का पालन करने में, कक्षा-कक्ष में बच्चों से तथा आधुनिक तकनीकी की सुविधा से भी समस्या उत्पन्न होती है। शोध अध्ययन में पाया गया कि शिक्षण कौशलों के प्रयोग का पर्याप्त अभ्यास न होना तथा उनके प्रयोग का पर्याप्त ज्ञान न होने से भी विद्यार्थी शिक्षकों को समस्याओं का सामना करना पड़ता है। इन समस्याओं के मुख्य कारणों में संस्थानों में व्यवस्थित प्रशिक्षण की कमी, पर्याप्त व योग्य प्रशिक्षित शिक्षकों की कमी तथा विद्यार्थी शिक्षकों के लिए अभ्यास शिक्षण हेतु विद्यालयों में पर्याप्त समय न मिल पाना, क्योंकि ये विद्यार्थी-शिक्षक इंटर्नशिप हेतु बाहर के विद्यालयों में निर्भर होते हैं। ये विद्यालय इनको प्रशिक्षण हेतु पर्याप्त समय नहीं दे पाते हैं, क्योंकि इन विद्यालयों को भी अपने विद्यार्थियों की शैक्षिक प्रक्रिया को निर्धारित समय में पूर्ण करना होता है।

शैक्षिक निहितार्थ

इस शोध अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि विद्यार्थी-शिक्षकों को अभ्यास शिक्षण के दौरान प्रस्तावना प्रश्न बनाने में, प्रस्तावना प्रस्तुतीकरण में, कक्षा-कक्ष में बच्चों से, पाठ योजना प्रारूप का पालन करने में तथा आधुनिक तकनीकी की सुविधा से सर्वाधिक समस्या उत्पन्न हो रही थी। सभी शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों को अभ्यास शिक्षण के बारे में गंभीरतापूर्वक विचार करना होगा, क्योंकि अभ्यास शिक्षण के सफल संचालन से ही एक अच्छे एवं योग्य शिक्षक का निर्माण किया जा सकता है तथा उसमें शिक्षण के प्रति आत्मविश्वास पैदा किया जा सकता है। शिक्षक की भूमिका राष्ट्र निर्माता के रूप में होती है। विद्यार्थी शिक्षक की भूमिका में जितना ही उत्तम प्रशिक्षण उसे प्रदान किया जाएगा वह उतना ही दक्ष एवं आदर्श शिक्षक के रूप में पूर्ण मनोयोग से अपनी भूमिका का निर्वहन कर सकेगा।

सुझाव

विद्यार्थी शिक्षकों में अभ्यास शिक्षण में समस्याएँ हमेशा व्यक्तिगत कारणों से नहीं होती हैं, इसके पीछे कुछ सामाजिक एवं आर्थिक कारण भी उत्तरदाई होते हैं। हमें

उस व्यवसाय की वास्तविक स्थिति का आकलन कर सकारात्मक दिशा में प्रयास करना चाहिए।

1. अध्यापक शिक्षा में कार्यरत शिक्षक-प्रशिक्षण संस्थानों को अपने संस्थानों में योग्य एवं प्रशिक्षित शिक्षकों की नियुक्ति कर अभ्यास शिक्षण में विद्यार्थी शिक्षकों के सम्मुख आने वाली समस्याओं को दूर किया जा सकता है।
2. शिक्षक-प्रशिक्षण संस्थानों को विद्यार्थी-शिक्षकों के लिए अभ्यास शिक्षण हेतु व्यवस्थित एवं पूर्णकालिक व्यवस्था के द्वारा उनकी समस्याओं को दूर करने का प्रयास किया जाना समीचीन होगा।
3. समस्त शिक्षक-प्रशिक्षण संस्थानों तथा विद्यालयों में प्रशिक्षण कार्यक्रमों में प्रशिक्षण के महत्व को बताया जाए तथा पाठ्यक्रम में प्रशिक्षण को उचित स्थान प्रदान किया जाना चाहिए।
4. विद्यार्थी-शिक्षकों में पर्याप्त अभ्यास के द्वारा शिक्षण कौशलों का विकास कर यह सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि विद्यार्थी-शिक्षकों में शिक्षण कार्य के प्रति पूर्ण आत्मविश्वास आ गया है तभी उन्हें अभ्यास शिक्षण हेतु भेजा जाना चाहिए।
5. अध्यापक शिक्षा में कमी व गिरावट के कारणों का पता लगाकर उसे दूर किया जाना चाहिए।
6. अभ्यास शिक्षण के दौरान विद्यार्थी-शिक्षकों के लिए आधुनिक तकनीकी की सुविधा का विकास किया जाना चाहिए जिससे विद्यार्थी शिक्षकों में प्रशिक्षण को प्रभावी तथा रुचिकर बनाने की कला का विकास किया जा सकता है।

अध्यापक शिक्षा के लिए बहु-विषयक इनपुट के साथ ही उच्चतर गुणवत्तायुक्त विषयवस्तु और शैक्षणिक प्रक्रियाओं की आवश्यकता होती है। अतः इसे ध्यान में रखते हुए सभी अध्यापक शिक्षा कार्यक्रमों को समग्र बहु-विषयी संस्थानों में ही आयोजित किया जाना चाहिए। अध्यापक शिक्षा प्रदान करने वाले उच्चतर शिक्षण संस्थान शिक्षा और इससे संबंधित विषयों के साथ-साथ विशेष विषयों में विशेषज्ञों की उपलब्धता को सुनिश्चित किया जाना होगा। प्रत्येक संस्थान के पास सघन जुड़ाव के साथ काम करने के लिए सार्वजनिक और निजी स्कूलों और स्कूल परिसरों का एक नेटवर्क स्थापित किया जाना होगा जहाँ भावी शिक्षक अन्य सहायक गतिविधियों, जैसे— सामुदायिक सेवा, वयस्क और व्यावसायिक शिक्षा आदि में सहभागिता के साथ शिक्षण कार्य कर सकेंगे। शिक्षक प्रशिक्षण का संबंध बुनियादी शिक्षा से होता है। ये शिक्षक प्रशिक्षण के बाद प्राथमिक तथा विद्यालयी शिक्षा में शिक्षण कार्य करते हैं। जब तक शिक्षण प्रशिक्षण में आवश्यकतानुसार समुचित व्यवस्थाओं तथा गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की व्यवस्था नहीं की जाएगी तब तक शिक्षा की आधारशिला को मजबूती प्रदान करना संभव नहीं हो सकता है।

संदर्भ

गुप्ता. ए.पी. 2005. *सांख्यिकीय विधियाँ*. शारदा पुस्तक भवन. इलाहाबाद.

गैरेट. एच.ई. 1981. *मनोविज्ञान एवं शिक्षा में सांख्यिकी*. दशम संस्करण. बी.एफ. एंड संस. बाम्बे.

जॉन. वी. वेस्ट. 2000. *रिसर्च इन एजुकेशन*. प्रेन्टिस हाल ऑफ इंडिया लिमिटेड.

तोमर. लज्जाराम. 1991. *भारतीय शिक्षा के मूल तत्व*. सुरुचि प्रकाशन. केशवकुंज. झण्डेवाला. नई दिल्ली.

पाठक. पी.डी. 2008. *भारतीय शिक्षा के आयोग कोठारी कमीशन सहित*. आगरा पब्लिकेशन. आगरा.

मंगल. एस.के. और उमा मंगल. 2009. *शिक्षा तकनीकी*. पी.एच.आई. लर्निंग प्राइवेट लिमिटेड. नई दिल्ली.

सिंह. ए.के. 2005. *मनोविज्ञान. समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियाँ*. भारती भवन पब्लिशर्स एवं डिस्ट्रीब्यूटर्स. पटना. बिहार